डॉ. खासेराव पांडुरंग माळी
एम.ए.,पीएच्.डी.
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सद्‌गुरु गाडगे महाराज महाविद्यालय,
कराड

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.सुजाता शिवाजी पाटील ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध ''लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों का अनुशीलन'' मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं इनके शोध-कार्य से पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान - कराड.

तिथि - 31 दिसंबर, 2002

शोध-निर्देशक

(डॉ. खासेराव पांडुरंग माळी)

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु.सुजाता शिवाजी पाटील द्वारा एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत ''लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों का अनुशीलन'' शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय ।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 31 दिसंबर, 2002

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

प्रख्यापन

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 31 दिसंबर, 2002

शोध-छात्रा

(कु.सुजाता शिवाजी पाटील)

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा :-

मेरी रूचि नाटक विधा रही है। कोई भी नाटक पढ़ने या देखने के बाद उसके कथ्य की ओर आलोचनात्मक दृष्टि से देखने की आदी हूँ। नाटक के प्रति मेरे इस लगाव ने ही मुझे एम.फिल. के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। नाटक पढ़ने की अपेक्षा, देखने की, महसूस करने की चीज है। नाटक देखते समय दर्शक उसके साथ तन्मय हो जाते हैं। पंचेंद्रिय तो इससे अभिभूत हो जाते हैं। पर इनसे परे मन और आत्मा तक को यह अभिभूत करता है। नाटक के इन्हीं गुणों की वजह से साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इसका व्यापक और गहरा असर समाज जीवन पर पड़ता है। रंगमंचीयता की वजह से इसका प्रत्यक्ष असर समाज के सभी वर्ग के लोगों पर एक साथ हो जाता है। इसलिए कोई भी समस्या साहित्य की अन्य किसी भी विधा की अपेक्षा नाटक में चित्रित करके अपेक्षित प्रभाव की उम्मीद की जा सकती है। इसलिए श्रेष्ठ साहित्यिक 'नाटक' विधा का ही उपयोग करते हैं। साहित्य की सभी विधाओं में नाटक श्रेष्ठ होने से मुझे उससे अधिक लगाव है। इसलिए मेरे अध्ययन के लिए मैंने नाटक विधा चुनी है।

विषय चयन का महत्त्व :-

हिन्दी साहित्य में नाटककार अपने नाट्य-सृजन में अपना योगदान करते रहे हैं। मिश्रजी बुध्दिवादी कलाकार हैं। उन्होंने अपने नाटकों द्वारा बुध्दिवाद के धरातल पर समाज और व्यक्ति की विविध समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनका बुध्दिवाद एक तीक्ष्ण सत्य है, जो अपनी आत्मा में यथार्थवादी होकर जीवन में नवीनता का स्फुरण करता है। समाज के कटु यथार्थ की ओर उन्मुख होना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। आधुनिक जीवन और जगत की खरी और स्पष्ट आलोचना ही उनके नाटकों की मूल भित्ति है। उनमें न कल्पना की अतिरंजना है, न भावुकता

का अनुरोध और न रोमांस का अस्वाभाविक आकर्षण। उनमें जीवन का कटु और तीव्र सत्य है। अत: इनके नाटक व्यक्ति और समाज के लिए प्रेरणा देने वाले नाटक हैं। मिश्र जी के 'सिन्दूर की होली' और 'संन्यासी' नाटक भी ऐसे ही हैं। जिनमें व्यक्ति और समाज की जो वास्तविकता है उनका चित्रण किया है। विशेषत: लक्षणीय बात यह है कि इस विषय पर इस प्रकार का समन्वित अनुसंधान प्राप्त नहीं होता। मेरा शोध-प्रबंध इसी अभाव पूर्ति का विनम्र प्रयास है।

अनुसंधान के प्रारंभ में उत्पन्न प्रश्न :-

मिश्र जी के 'सिन्दूर की होली' और 'संन्यासी' इन नाटकों का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उठे -

1. क्या, मिश्र जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है ?
2. विवेच्य नाटकों का विषयगत अनुशीलन कैसे किया है?
3. विवेच्य नाटकों की चरित्रगत विशेषताएँ क्या है?
4. आलोच्य नाटकों का वातावरण कैसा है?
5. विवेच्य नाटकों का भाषा शिल्प कैसा है?
6. विवेच्य नाटकों में कौनसी समस्याओं का चित्रण हुआ है ?

अध्ययन के उपरान्त प्रश्नों के जो उत्तर मेरी दृष्टि से प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु-शोध-प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है।

प्रथम अध्याय :- लक्ष्मीनारायण मिश्र - व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में मिश्रजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत मिश्रजी का जन्म, माता-पिता, शिक्षा, विवाह, नौकरी, साहित्य के प्रति अनुराग, भारतीय

संस्कृति के प्रति आस्था आदि पहलुओं के द्वारा स्पष्टीकरण दिया है साथही कृतित्व के अंतर्गत मिश्र जी के नाट्यसाहित्यका संक्षिप्त परिचय दिया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय :- आलोच्य नाटकों के विषयवस्तु का अनुशीलन

इस अध्याय में नाटक का स्वरूप, कथावस्तु का स्वरूप, कथानक की विशेषताएँ बताकर वस्तुतत्व का महत्व और घटना-विन्यास की दृष्टि से नाटकों की कथावस्तु के लिए आवश्यक शर्तों का सैदधांतिक विवेचन प्रस्तुत किया है। मिश्रजी के नाटकों में वस्तुतत्व को जाँचने के लिए विवेच्य नाटकों की कथावस्तु का अनुशीलन किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

तृतीय अध्याय : आलोच्य नाटकों के प्रमुख पात्रों का अनुशीलन

इस अध्याय में चरित्र शब्द का अर्थ, नाटक में चरित्र-चित्रण का स्वरूप, चरित्रचित्रण आदि की सैद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की गयी है। इसके पश्चात मिश्रजी के आलोच्य नाटकों के पात्रों का चरित्रचित्रण किया गया हैं। और सिन्दूर की होली के प्रमुख पात्र माहिरअली, मनोरमा और चंद्रकला के चरित्र के विशेषताओं का चित्रण किया है। साथ ही 'संन्यासी' नाटक के विश्वकान्त, रमाशंकर, मुरलीधर, किरणमयी और मालती आदि चरित्रों का चित्रण किया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : आलोच्य नाटकों में चित्रित वातावरण का अनुशीलन

इस अध्याय में प्रस्तावना, देशकाल वातावरण से तात्पर्य, देशकाल वातावरण का स्वरूप, देशकाल वातावरण के गुण, साथ ही विवेच्य नाटकों में देशकाल और वातावरण के अंतर्गत आंतरिक और बाह्य वातावरण को चित्रित किया है और अंत में निष्कर्ष दर्ज किया गया है।

पंचम अध्याय : आलोच्य नाटकों में चित्रित भाषा-शिल्प की अनुशीलन

इस अध्याय में भाषा का स्वरुप, शिल्प का अर्थ, शिल्प की परिभाषा, शिल्प का महत्व, शिल्प का स्वरुप, भाषा-शिल्प से तात्पर्य, नाटक में भाषा-शिल्प का महत्व, मिश्रजी के विवेच्य नाटकों में भाषा शिल्प जिसके अंतर्गत विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग जिसमें संस्कृत, अरबी, फारसी, अंगरेजी, देशज, विदेशी, तुर्की, अनुकरणबोधात्मक शब्द, उर्दू शब्द, ध्वन्यार्थक शब्द, द्विरुक्त शब्द, अपशब्द आदि भाषाओं का प्रयोग किया है। साथ ही भाषा को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए अलंकारिक भाषा, मुहावरें से युक्त भाषा, वाक्य-विन्यास, दार्शनिकता से युक्त भाषा, व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग, ओजपूर्ण भाषा का प्रयोग, सीधी, सरल भाषा तथा प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया है और अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

षष्ठ अध्याय : आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्याएँ

इस अध्याय में समाजगत और व्यक्तिगत समस्याओं का विवेचन किया है और अंत में जो तथ्य आये हैं उनके आधारपर निष्कर्ष दिया गया है।

उपसंहार :

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में उपसंहार में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची ।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करने वाले गुरुजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

मेरे निर्देशक सद्‌गुरु गाडगे महाराज कॉलेज के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.के.पी.माली जी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है। मैं उनके सहयोग से ही मेरा लघु-शोध-प्रबंध पूरा कर पाई । मैं उनकी सदा ऋणी रहूँगी।

श्रद्धेय गुरूवर्य हमारे हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ.पांडुरंग पाटील, प्रा.इंगवले आदि के समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरे माता-पिता तथा छोटी बहन मनिषा तथा छोटा भाई अमोल सभी बराबर के हिस्सेदार हैं। जिन्होंने मुझे परिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर मेरे परम मित्र श्री.रशीद तहसिलदार, अण्णा हरदारे, अर्चना गायकवाड इन्होंने मेरी हमेशा सहायता कर अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखने के लिए निरंतन प्रोत्साहन तथा उनकी प्रेरणा से हीं मैं अपना लघु-शोध-प्रबंध पूरा करने में सफल रही हूँ। साथ ही शैलजा कांबळे, सरोज कांबळे, विद्या सुतार, जितेन्द्र कोले, हणमंत पाटील, हिंदूराव साळुंखे, अजय शिंदे, तात्यासो जाधव आदि की सदिच्छा से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल और उन सभी कर्मचारियों के प्रति मै कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मदद की।

इस प्रबंध का आत्मीयता और तत्परता से सुचारु रूप से टंकन-लेखन करने वाले मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवले और उनके सहायक श्री. राजू कुलकर्णी जी ने शीघ्रता से किया हैं। मैं उनकी आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरुजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद।

(कु. सुजाता पाटील)